साहित्यसुधा

साहित्यकारों की वेबपत्रिका

साहित्यकारों की रचना स्थली

वर्ष: 3, अंक 54, फरवरी(प्रथम) , 2019

लौट आओ दीपशिखा

(धारावाहिक उपन्यास)

लेखिका

संतोष श्रीवास्तव

गतांक से आगे

"मैं एक पल भी तुम्हारे साथ गुज़ारना नहीं चाहती, नफ़रत करती हूँ तुमसे..... मुझे तुम्हारी शक्ल देखना भी मंजूर नहीं मिस्टर नीलकांत|"

नीलकांतने उसे बाहों में भरकर उसके होठों पर अपने होठ टिका दिये| अब उसकी मुट्ठियों में दीपशिखा के बाल थे जिन्हें सख़्तपकड़कर उसने उसका चेहरा उठा सा दिया तकलीफ़ से दीपशिखा के माथे पर लकीरें उभर आईं|

"बताओ..... कब से गौतम के संग तुम्हारे रिलेशन हैं| मुझे उल्लू बनाती रहीं और मेरी आड़ में इश्क़ उससे करती रहीं..... धोखेबाज़ तुम हो|"

दीपशिखा दंग रह गई| इस उलटवार की उसे उम्मीद न थी|

"बताओ तुमने मेरे साथ ऐसा क्यों किया?"

उसने नीलकांत को धक्का देकर खुद को छुड़ाया और तेज़ी से दरवाज़े की ओर मुड़ी|

"मेरी बात का जवाब दिये बिना तुम नहीं जा सकतीं|" नीलकांतनेज़ोर से उसकी बाँह पकड़ी| नरम माँस पर उसकी उँगलियों के निशान उभर आये|

"क्या कर लोगे? मेरा मर्डर? और तुम कर भी क्या सकते हो? अपनीग़लती मुझ पर थोपकर तुम भले ही अपनी सफ़ाई में कुछ भी करो पर अब चैन तुम्हें ज़िन्दगी भरनहीं मिलेगा|" दीपशिखा उत्तेजित थी| उसे पसीने का अटैक सा आया| मुँहमें पानी सा भरने लगा| देखते ही देखते उस दिन जैसा उबाल उसके पेट से सीने की ओर उछला| वह भागकर बाथरूम में गई और उल्टी करने लगी| पीछे-पीछे नीलकांत आया| उसकी पीठ सहलाने लगा|दीपशिखा ने उसके हाथ झटक दिये| वह थोड़ी देर दीवार से लगकर खड़ी रही|

"लेट जाओ, दवा मँगवाता हूँ|"

दीपशिखा ने आँखें तरेरकर नीलकांत की ओर देखा और दरवाज़ा खोल बाहर निकल गई| नीलकांत ने उसे नहीं रोका|

टैक्सी लेकर दीपशिखा सीधी शेफ़ाली के घर गई| शेफ़ाली डिनर तैयार कर रही थी| उसे देखकर खुशी से भर उठी- "अच्छे वक़्त पर आई तू, मैं तेरा मनपसंद गुच्छी पुलाव बना रही हूँ|"

दीपशिखा उससे लिपटकर रो पड़ी| रोते-रोते ताज होटल में घटी सारी घटना उसे सुनाई| उल्टी की बात सुन शेफ़ाली ने पूछा- "नीलकांत को गोली मार..... ये बता तुझे बार-बार उल्टियाँ क्यों आ रही हैं? कहींतू प्रेग्नेंट तो नहीं?"

दीपशिखा के पैरों तले से ज़मीन खिसक गई- "हो सकता है| मुझेपीरियड्स भी तो नहीं आ रहे हैं| मैंने तो ध्यान ही नहीं दिया| अब क्या होगा?"

“इसका मतलब है कि तुझे पूरी तरह से नीलकांत से छुटकारा नहीं मिला है| एबॉर्शन कराना पड़ेगा|”

दीपशिखा चकरा गई- “कैसे? दाई माँ अनुभवी हैं, पल पल की ख़बर रखती हैं|”

शेफ़ाली थोड़ी देर सोचती रही| एकाएक उसका ध्यानदीपशिखा की बाँह की ओर गया|नीलकांत की उँगलियों के निशान लाल लाल उभरे हुए थे- “बाप रे..... रीयली राक्षस ही हैनीलकांत| एक दिन ज़रूर मेरे हाथों से पिटेगा|”

और दौड़कर क्रीम उठा लाई| दीपशिखा की दुर्गति से उसकी आँखों में भी पानी तैर आया| तभी उसके सास ससुर घूम कर लौटे| दीपशिखाकोदेखकरदोनों खुश होगये-“बहुत दिनों बाद आई आप?”

“जी, थोड़ा बिज़ी थी|”

“चाय नाश्ता लिया?” सास उसके बाजू में ही बैठ गईं|

“जी” दीपशिखा समझ गई अब शेफ़ाली से बात होनी मुश्किल है|

“तो मैं चलूँ?”

शेफ़ाली ने भी यही ठीक समझा| उसने ड्राइवर से दीपशिखा को उसके घर छोड़ आने के लिये कहा| गाड़ी में बैठाकर शेफ़ाली ने उसे तसल्ली दी- “कल तक कुछ प्लान करते हैं|”

दीपशिखाने आँखें झपकाईं|

जैसे ही गेट के सामने गाड़ी रुकी उसने गौतम को खड़े पाया- “अरे..... तुम अभी आये?”

“नहीं..... फोन लगा-लगा कर थक गया| तुम्हारे घर जाना मैंने उचित नहीं समझा| तब से यहीं खड़ा हूँ|”

जाने क्या हुआ..... किस लम्हे ने कहाँ छुआ उसे कि वह बेक़रार हो गौतम से लिपट गई| दोनों की ख़ामोशी सूनी सड़क पर बहुत कुछ कहती हुई फूलों की खुशबू और हवाओं के संग बहती हुई बार-बार दोनों से लिपटती रही..... रात ढलती रही|

तय हुआ कि शेफ़ाली उसे लेकर पूना जायेगी और वहीं एबॉर्शन होगा|

“दाई माँ को क्या बताना है और गौतम जो हर पल मेरे साथ रहता है| पता है कल वह मेरे घर के सामने तब तक खड़ा रहा जब तक मैं लौट नहीं आई|”

“लगता है तेरी भटकन अब समाप्त हुई और तुझे सच्चा जीवन साथी मिल गया| उसे सच बता दे| वह तुझे प्यार करता है| अगर उसे कहीं और से पता चला तो वह टूट जायेगा| दाईमाँ को प्रदर्शनी का बताओ|”

दीपशिखा खुद को तैयार करने लगी| गौतम को सच बताना ज़रूरी है| धीरे-धीरे उम्र की परिपक्वता से दीपशिखा ने महसूस कर लिया था कि गौतम अंत तक उसका साथ देगा| मुकेश उसे प्यार नहीं करता था

बल्कि वह कच्ची उम्र का जुनूनथा| जो चढ़ा और उतर गया| नीलकांत के प्यारमें वासना थी| वासना ही प्यार में प्रतिशोध पैदा करती है|नीलकांत का ताज होटल में जो आक्रामक रवैया था वह दीपशिखा के द्वारा ठुकराए जाने और हताशा की वजह से था जिसने नीलकांत को जानवर बना दिया था| शायद इतनी प्रख्यात कुशल चित्रकार को अपने प्रेम के जाल में फँसाकर उसे एक वस्तु की तरह इस्तेमाल करने में नीलकांत का कुंठित मन संतुष्ट हुआ हो| यह बात पहले क्यों नहीं समझ पाई दीपशिखा| नीलकांत के बरक़्स गौतम ने उसकी हर चोट को सहलाया है..... दीपशिखा की तरफ़ से उसके प्रति उचाट, ठंडा व्यवहार भी गौतम को डिगा नहीं सका| अभी भी नहीं डिगेगा गौतम..... जानती है वह|

उसने गौतम को फोन लगाया- “तबीयत ठीक नहीं है गौतम|”

“घर पे हो न..... आता हूँ|”

आधे घंटे में पहुँच गया वह- “तो तुम्हारे घर आने का आज मुहूरत निकला?” वह हँसते हुए बैठ गया- “कैसी हो, क्या हुआ?”

दाई माँ की वजह से बताना मुमकिन नहीं था- “वो तो तुम्हें बुलाने का बहाना था| एक खुशखबरी सुनानी थी| मेरे और शेफ़ाली के चित्रों की प्रदर्शनी पूना में लग रही है| तुम चलोगे?”

“क्यों नहीं? तैयारी हो गई?”

“आज सुबह ही फोन आया कि दो दिन बाद पहुँचना है| चित्र तो तैयार हैं..... बस, रीटच देना होगा| आज घर पर ही आराम करूँगी| कल स्टूडियो जाऊँगी|” और अपने इस झूठ पर वह ग्लानि से भर उठी|गौतम ने इस सवाल को अंदर ही दबोच लिया कि..... ‘तुम जो कह रही हो..... वजह वो नहीं लग रही है मुझे|’ दीपशिखा उठकर देख आई..... दाई माँ रसोई में सब्ज़ी काट रही थीं- “गौतम के लिए भी खाना बनेगा दाई माँ|”

और वह गौतम को लेकर बाल्कनी में आ गई| बादलों की वजह से धूप नहीं थी, मौसम सुहावना लग रहा था| समुद्र में दूर एक जहाज की चिमनी धुँआ उगल रही थी| उसने धीरे-धीरे सब कुछ बताया, बताकररीएक्शन देखने के लिये उसने गौतम की ओर देखा..... एक देवत्व नज़र आया वहाँ| एक ऐसी गहराई जहाँ खुद को खँगाल सकती है वह..... सिर्फ आज ही नहीं, बल्कि हमेशा|

क्रमश:

कृपया रचनाकार को मेल भेज कर अपने विचारों से अवगत करायें